245 (P)
866
H
Microfilm

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1316/10/21

आह्वानांक Call No.

अवाप्ति सं० Acc. No. 866

आप १४ एप्रिल को, प्रयाग में, गिरफ़्तार होकर छः महीने के लिये क़ैद किए गए

"स्वतंत्र-भारत" का झंडा सबसे पहले लहरानेवाले भारतीय
राष्ट्र-महासभा के साम्य-वादी सभापति

राष्ट्रपति पं० जवाहरलालजी नेहरू

प्रकाशक—हिंदू-समाज-सुधार कार्यालय, लखनऊ. १९३०

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED.
10 DEC. 1930

S.S.
2011

891.43
SW19SW

* वन्देमातरम् *

स्वतन्त्रता का बिगुल ।

स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है ।

——लो० बा० तिलक ।

मुद्रक तथा प्रकाशकः-

मैनेजर, भास्कर प्रेस, देवरिया (गोरखपुर)

सन् १९३० ई०] [मूल्य केवल एक पैसा]

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 866
Date 23.12.71
GOVT. OF INDIA

❁ महात्मा गान्धीजी की ११ शर्तें ❁

महात्मा गान्धी की ग्यारह शर्तें अमल में लाकर दिखाना होगा ।
प्रजा के आगे तुझे, सितमगर ! सर अपना अब तो झुकाना होगा ॥

१-नशीली चीजें शराब, गांजा, अफीम आदिक जो बुद्धि हरतीं ।
मिटा के इनकी खरीद—बिक्री, दुकानें सारी उठाना होगा ॥

२-हमारे सिक्के की दर को साहब ! घटा बढ़ा करके लूटते हो ।
अब एक शिल्लिङ्ग चार पेनी, ही भाव उसका बताना होगा ॥

३-लगान आधा करो जमी का, किसान जिससे ज़रा सुखी हों ।
मुहकमा इसका हमारी कौंसिल के तावे तुमको रखाना होगा ॥

४-फिज़ूल-खर्ची बिला जरूरत जो फौज पर हो रही हमारी ।
अधिक नहीं गर, तो आधा उसको जरूर साहब घटाना होगा ॥

५-बड़े-बड़े भारी-भारी वेतन डकारते हैं जो आला अफ़सर ।
उसे मुआफ़िक़ लगाना आधा या उससे भी कम कराना होगा ॥

६-स्वदेशी कपड़े करें तरक्की विदेशी कपड़े न आने पावें ।
विदेशी कपड़ों पे और महसूल, तुमको ज्यादा लगाना होगा ॥

७-समुद्र-तट का जहाज़ी वाणिज न हाथ में हो विदेशियों के ।
उसे हमारे महाजनों के अधीन रख कर चलाना होगा ॥

८—जिन्हें क़तल या क़तल इरादा सज़ा मिली हो उन्हें न छोड़ें ।

अकाया कैदी पुलीटिकल सब तुरन्त साहब ! छुड़ाना होगा ॥
९-उठा लिये जायं राजनैतिक जो मामले चल रहे मुल्क पर ।
जो इकसौ चौबिस दफा अलिफ़ है उसे तो बिलकुल मिटाना होगा ॥
अठारह का एक्ट रेगुलेशन, तथा दफा ऐसी सब उठा कर ।
जिलावतन सब हमारे भाई वतन में साहब ! बुलाना होगा ॥
१०-मुहकमा खुफिया पुलिस उठा दो या कर दो उसको प्रजाके ताबे ।
११-हमें बन्दूक और पिस्तल बरा हिफ़ाजत दिलाना होगा ॥
हमें सबर होगा बस उसी दम जब होंगी पूरी ये ग्यारह शर्तें ।
सहे हैं जुल्मो सितम हजारों, न ज्यादा हमको रुलाना होगा ॥

❀ राष्ट्रीय-संगीत ❀

यह राष्ट्र ध्वजा धन मेरा, जीवन बलिदान करेंगे ।
झण्डा है प्राण हमारा, प्राणों, से बढ़ कर प्यारा,
तन-मन-धन इस पै वारा जीवन कुरबान करेंगे ॥ १ ॥
शूली पर उछल चढ़ेंगे बन्धन से नहीं डरेंगे ।
सब कुछ सानन्द सहेंगे पर झण्डा नहीं तजेंगे ॥ २ ॥
आओ झण्डा फहरावें शुचि राष्ट्र भाव दर्शावें ।
सत्याग्रह समर दिखावें पर हिंसा नहीं करेंगे ॥ ३ ॥

❀ राष्ट्रीय-झंडा ❀

विजयी विश्व तिरङ्गा प्यारा, झण्डा ऊँचा रहे हमारा ॥

सदा शक्ति सरसाने वाला, प्रेम—सुधा बरसाने वाला ;
वीरों को हरषाने वाला-मातृ भूमि का तन मन सारा ॥ झण्डा ॥

स्वतन्त्रता के भीषण रण में—लख कर बढ़े जोश क्षण २ में;
कांपे शत्रु देख कर मन में-मिट जावें भय संकट सारा ॥ झण्डा ॥

इस झण्डे के नीचे निर्भय—लें स्वराज्य यह अविचल निश्चय,
बोलो भारत माता की जय-स्वतन्त्रता है ध्येय हमारा ॥ झण्डा ॥

आओ प्यारे वीरो आओ—देश धर्म पर बलि बलि जाओ;
एक साथ सब मिल कर गाओ, प्यारा भारत देश हमारा ॥ झण्डा ॥

इसकी शान न जाने पाये—चाहे जान भलेही जाये,
विश्व मुग्ध करके दिखलाये—तब होवे प्रण पूर्ण हमारा ॥ झण्डा ॥

❀ दमन—नीति का स्वागत ❀

दमन नीति के मूल भयङ्कर ! तू हमको होवेगा शं-कर ॥
प्रकटित होगा तुमसे ही सत—
स्वागत ! स्वागत ॥

पड़ देंगी हमको हथकड़ियां—तेरी जंजीरों की कड़ियां ॥
सिर पर "गोले" होंगे अक्षत
स्वागत स्वागत !!

कारागार स्वर्ग—सम जाना—अत्याचार सहेंगे नाना ।
इनसे दूनी होगी ताक़त !

स्वागत ! स्वागत !!

मुँह बन्दी पर मुसकायेंगे—कोड़ों पर बलि २ जायेंगे ।
कौड़ी देंगे नहीं अमानत ।

स्वागत ! स्वागत !!

फक्कड़दार [illegible] आयेंगे—सूखे टुकड़े अपनायेंगे ।
हैं आश्रमी, हमें यह न्यामत !

स्वागत ! स्वागत !!

❀ भारत के शेर ❀

भारत के शेर जागो बदला है अब ज़माना ।
प्यारे वतन को इस दम आज़ाद है बनाना ॥
मत बुज़दिली को हरगिज़ तुम पास दो फटकने ।
आख़िर तो दम अदम को होगा कभी रवाना ॥
स्वातन्त्र्य देवी के तुम जल्दो बनो उपासक ।
निज पूर्वजों का तुमको गर नाम है चलाना ॥
परदेशियों का इस दम जो साथ दे रहे हैं ।
उनको हराम है अब भारत का अन्न खाना ॥

दृढ़ सत्य पर रहो तुम धारण करो अहिंसा ।
आकर के जोश में तुम हुलड़ नहीं मचाना ॥
भारत की कीर्ति नाहक करते हो तुम कलङ्कित ।
वालेंण्टियर बनो तुम अब छोड़ दो बहाना ॥
दिल में झिझक न लाओ आगे कदम बढ़ाओ ।
है स्वर्ग के बराबर इस वक्त जेलखाना ॥
"सरजू" समय नहीं है कुछ कर लो देश सेवा ।
दो दिन की जिन्दगी है इसका नहीं ठिकाना ॥

॥ चेतावनी ॥

जागो हुआ सवेरा गान्धी जगा रहा है ।
यह आत्म बल-प्रवर्द्धक शुभ काल आ रहा है ॥
अन्याय की निशा से अन्धेर से न डरना ।
सूरज स्वराज्य अपनी लाली दिखा रहा है ॥ जागो० ॥
सुस्ती के बिस्तरे से फुर्ती से उठ खड़े हो ।
सब जग चुके तुम्हीं पर दारिद्र छा रहा है ॥ जागो० ॥
हो नवजवान तुमको जग जाना चाहिए अब ।
सोने दो वृद्ध जन को आलस्य आ रहा है ॥ जागो० ॥
यह दासता तो सुखका सपना है, भ्रम है "योगी" ।
स्वाधीनता के सुख का अवसर वो आ रहा है । जागो० ॥

—राष्ट्रीय योगी ।

❀ माता की चाह ❀

चाहती है माता बलिदान, जवानो उठो ! हिन्द सन्तान । चाहती० ।
हँसते हुए फूल से आकर शीश झुका दो माँ के पग पर ।
कटता हो कट जाने दो सर तनिक न होना म्लान । जवानो उठो० ।
सोने वालो ! उठो कड़क कर आगे हुए बढ़ो बेदी पर ।
बूढ़ा हो नारी हो या नर, सबको है आह्वान । जवानो उठो० ।
हो चमार भङ्गी या पासी विप्र पुजारी या सन्यासी ।
धनी दरिद्री हो उपवासी सबका भाग समान । जवानो उठो० ।
उठो अपढ़ मूरख विद्वानो ! हिन्दू मुस्लिम औ क्रिस्तानो ।
जैन पारसी सिख महानो ! प्यारा मां के प्रान । जवानो उठो ।
अरे छात्रो ! भावी अधिकारी उठो उठो निद्रित व्यापारी ।
उठो मजूरो दीन भिखारी दुखी दरिद्र किसान । जवानो उठो ।
हो गुलाम कैसा हो दागी वर्तमान शासन अनुरागी ।
नरम गरम बैरागी त्यागी उठो सभी मतिमान । जवानो । उठो०
स्वार्थ और मतभेद मिटाओ बैर फूट को दूर भगाओ ।
फहराओ जग आज हिन्दमें इक जातीय निशान । जवानो उठो ॥
फाँसी चढ़ो जेल में जाओ भय वश कभी न देश भुलाओ ।
हथकड़ियों पर मिलकर गाओ स्वतन्त्रता का गान । जवानो उठो०
पूरन करो यज्ञ माता का ज्यों प्रताप अभिमानी बाँका ।
ज्यों शिव सूर्य हिन्द गुरुताका जैसे तिलक महान । जवानो उठो०
उठी गगन झङ्कार सुखारी गान्धी वीणा की अति प्यारी ।
साहस सरस उठो दिखला दो कानों में है जान ॥ जवानो उठो० ॥

॥ वीर प्रण ॥

भारत न अब रहेगा हरगिज़ गुलामखाना ।
आज़ाद होगा होगा आता है वह ज़माना ॥
खूं खौलने लगा है हिन्दुस्तानियों का ।
कर देंगे ज़ालिमों का हम बन्द ज़ुल्म ठाना ॥
कौमी तिरङ्गे झण्डे पर जाँ निसार अपनी ।
हिन्दू मसीह मुस्लिम गाते हैं यह तराना ॥
अब भेड़ और बकरी बन कर न हम रहेंगे ।
इस पस्त हिम्मती का होगा कहीं ठीकाना ॥
परवाह अब किसे है जेल वो दमन की प्यारी ।
इक खेल हो रहा है फांसी पै झूल जाना ॥
भारत वतन हमारा भारत के हम हैं बच्चे ।
माता के वास्ते है मंज़ूर सर कटाना ॥

वीर की अभिलाषा ।

सेवा में तेरी भारत ! तन मन लगायेंगे हम ।
फिर स्वर्ग का सहोदर तुझको बनायेंगे हम ॥
तुझ से जिये तुझी ने पालन किया हमारा ।
उपकार जितना करता क्या क्या गिनायेंगे हम ॥
तेरे ऋणों का बोझा सर पर धरा हमारे ।
करके प्रयत्न पूरा उसको चुकायेंगे हम ॥
तेरे लिये जियेंगे तेरे लिये मरेंगे ।
आकाश तुझको कर के ऊँचा बनायेंगे हम ॥

—मैनेजर, भास्कर प्रेस, देवरिया (गोरखपुर)